



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 05, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2025)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

21वीं सदी में सागौन (Teak): वानिकी और संरक्षण में वर्तमान स्थिति और उभरते दृष्टिकोण

*अदिति शर्मा¹ एवं नवीन कटोच²

¹वन प्रबंधन एवं कृषि वानिकी विभाग, डॉ. यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं

वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन, हिमाचल प्रदेश

²मारवाड़ी विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात

*संवादी लेखक का ईमेल पता: sharmaaditi.916@gmail.com

सागौन (*Tectona grandis* L.f.), जिसे विश्वभर में “लकड़ी का राजा” कहा जाता है, अपनी मजबूती, आकर्षक रंग, दीमक और सड़न-रोधी गुणों के कारण सदियों से प्रसिद्ध है। 21वीं सदी में यह केवल एक व्यावसायिक वृक्ष नहीं रहा, बल्कि ग्रामीण आजीविका, पर्यावरणीय संतुलन और जलवायु परिवर्तन से निपटने का साधन बन चुका है। भारत और एशिया के प्राकृतिक सागौन वनों पर अत्यधिक दोहन और भूमि उपयोग परिवर्तन का दबाव है, जबकि अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में इसके वैज्ञानिक रोपण क्षेत्र बढ़ रहे हैं। छोटे किसानों के लिए सागौन न केवल आय का स्रोत है, बल्कि दीर्घकालिक संपत्ति सृजन (Green Investment) का भी माध्यम है। यह लेख सागौन की पारिस्थितिकीय भूमिका, कृषि-वानिकी एकीकरण, और किसानों के लिए इसकी संभावनाओं पर प्रकाश डालता है।

परिचय

सागौन का नाम सुनते ही मजबूत फर्नीचर, चमकीली सुनहरी लकड़ी और टिकाऊ निर्माण सामग्री की छवि मन में आती है। इसका उपयोग प्राचीन काल से नौका निर्माण, पुल, फर्नीचर, दरवाजे और सजावटी वस्तुओं में होता आया है। भारत, म्यांमार, थाईलैंड और लाओस इसके प्रमुख प्राकृतिक क्षेत्र हैं। परंतु आज बढ़ती आबादी, अवैध कटाई और जलवायु परिवर्तन ने इन प्राकृतिक वनों को संकट में डाल दिया है। ऐसे समय में किसान-आधारित सागौन रोपण एक व्यावहारिक और लाभकारी विकल्प बनकर उभरा है। यह वृक्ष न केवल उच्च आय देता है बल्कि भूमि की उत्पादकता बढ़ाता है, जल संरक्षण करता है और पशुओं को छाया व चारा प्रदान करता है। सागौन आधारित कृषि-वानिकी प्रणाली (Agroforestry system) में किसान फसलों के साथ वृक्ष उगाकर दोहरा लाभ उठा सकते हैं — एक तरफ सालाना फसल का उत्पादन और दूसरी तरफ भविष्य में लकड़ी की उच्च कीमत से आय।

1. जलवायु और स्थल चयन

सागौन की खेती के लिए 15°C से 38°C तापमान और 1000 से 2500 मिमी वर्षा सर्वोत्तम मानी जाती है। यह वृक्ष उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु दोनों में अच्छी वृद्धि करता है। पहाड़ी इलाकों में, जहाँ भूमि ढलानदार होती है, टेरस फार्मिंग (सीढ़ीनुमा खेती) अपनाकर मिट्टी के कटाव को रोका जा सकता है। सागौन गहरी, जलनिकास वाली दोमट मिट्टी में सबसे अच्छा बढ़ता है। क्षारीय या दलदली भूमि से बचना चाहिए। पहाड़ी किसानों के लिए यह फायदेमंद है क्योंकि इसे सूखा सहन करने की क्षमता होती है और एक बार स्थापित हो जाने पर कम

देखभाल में भी यह अच्छा विकास करता है। यदि खेतों की मेड़ों या सीमाओं पर लगाया जाए तो यह खेतों की सुरक्षा भी करता है और भूमि की सुंदरता बढ़ाता है।

2. पौध तैयार करना और रोपण का समय

सागौन की पौध तैयार करने के दो प्रमुख तरीके हैं बीज आधारित और क्लोनल (क्लोनल कटिंग या टिश्यू कल्चर)। बीज वाले पौध सस्ते और आसानी से उपलब्ध होते हैं, जबकि क्लोनल पौधों में बढ़वार समान रहती है और लकड़ी की गुणवत्ता अधिक होती है। बीजों को गर्म पानी में 24 घंटे भिगोकर सुखाने से अंकुरण दर में वृद्धि होती है। रोपण का उचित समय मानसून के शुरुआती महीने यानी जून से जुलाई होता है। पौधों की दूरी 3x3 मीटर या 4x4 मीटर रखी जाती है। प्रारंभिक दो वर्षों तक निराई-गुडाई और पौधों की सुरक्षा अत्यंत आवश्यक होती है। खेत के किनारों या बंजर भूमि पर सागौन लगाने से भूमि का उपयोग अधिक उत्पादक बन सकता है।

3. देखभाल, पोषण और वृद्धि प्रबंधन

सागौन की प्रारंभिक वृद्धि को तेज करने के लिए गोबर की खाद या कम्पोस्ट डालना लाभकारी है। प्रत्येक पौधे को 10–15 किलोग्राम गोबर खाद व थोड़ी मात्रा में रासायनिक उर्वरक (एनपीके) देना चाहिए। सूखे समय में हर 15–20 दिन में सिंचाई करनी चाहिए। सागौन में तनों की सीधाई बढ़ाने के लिए समय-समय पर छंटाई (pruning) करनी चाहिए ताकि शाखाएँ अधिक न फैलें और लकड़ी की गुणवत्ता अच्छी बनी रहे। प्रारंभिक वर्षों में खेतों के बीच दलहन फसलें जैसे उड्ढ, मूंग, या मूँगफली बोई जा सकती हैं, जो मिट्टी में नाइट्रोजन बढ़ाती हैं और वृक्षों की वृद्धि में मदद करती हैं।



4. रोग और कीट प्रबंधन

सागौन में मुख्य कीट पत्ती झुलसा (Hyblaea puera), तना छेदक और दीमक हैं। इनसे पौधों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं और वृद्धि रुक जाती है। जैविक उपायों में नीम तेल (Neem oil) या ट्राइकोडर्मा का छिड़काव बहुत उपयोगी है। पौधों के आसपास खरपतवार साफ रखें ताकि कीटों का प्रकोप कम हो। कभी-कभी रोग की स्थिति में कुपोषण कारण होता है, इसलिए मिट्टी की जांच करवाकर उर्वरक का सही अनुपात दें।



5. लकड़ी की प्राप्ति और आर्थिक लाभ

सागौन वृक्ष 15–20 वर्ष में कटाई योग्य हो जाता है। एक हेक्टेयर क्षेत्र से लगभग 150–200 घनफुट लकड़ी प्राप्त की जा सकती है, जिसकी बाजार कीमत ₹800–₹1200 प्रति घनफुट तक होती है। इस प्रकार एक हेक्टेयर से ₹10–15 लाख तक शुद्ध लाभ संभव है। इसके अलावा, सागौन की पत्तियाँ पशु चारे, हरी खाद और जैविक मल्च के रूप में उपयोगी हैं। पौधारोपण में एक बार निवेश करने के बाद देखभाल के खर्च बहुत कम होते हैं, जिससे यह किसानों के लिए दीर्घकालिक लाभदायक फसल सिद्ध होती है।

6. पर्यावरणीय एवं सामाजिक महत्व

सागौन केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह वृक्ष वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित कर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करता है। इसकी गहरी जड़ें मिट्टी को कटाव से बचाती हैं, और पत्तियाँ मिट्टी में जैविक कार्बन बढ़ाती हैं। सागौन के वृक्ष पक्षियों, कीटों और छोटे जानवरों के लिए प्राकृतिक आवास प्रदान करते हैं, जिससे जैव विविधता (Biodiversity) को बढ़ावा मिलता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में यह वृक्ष छाया, ईंधन और रोजगार का भी साधन बनता है। कई स्थानों पर महिला स्वयं सहायता समूह सागौन की नसरी संचालित कर रही हैं, जिससे ग्रामीण महिला सशक्तिकरण को नई दिशा मिल रही है।

निष्कर्ष

सागौन की खेती किसानों के लिए केवल लकड़ी का व्यापार नहीं, बल्कि एक हरित निवेश और पर्यावरणीय सेवा है। यह भूमि की उत्पादकता बढ़ाता है, जलवायु परिवर्तन के खतरे को कम करता है और आने वाली पीड़ियों के लिए हरियाली की विरासत छोड़ता है। यदि किसान इसे वैज्ञानिक ढंग से अपनाएँ सही प्रजाति चयन, पौध गुणवत्ता, जैविक प्रबंधन और दीर्घकालिक योजना के साथ तो यह खेती आर्थिक सुरक्षा, हरित रोजगार और पर्यावरणीय स्थिरता का आधार बन सकती है।